चरों को परिभाषित करना (Defining the variables) — शोध समस्या तथा परिकल्पना में स्वतंत्र चर तथा आश्रित चर का स्पष्ट उल्लेख रहता है। शोधार्थी को इस दृष्टि (Study में उल्लिखित चरों को संक्रियात्मक रूप (Operationally) परिभाषित करना होता है और शोधार्थी द्वारा स्पष्टता से इन चरों को परिभाषित किया जाना है। अगर स्वतंत्र एवं आश्रित चरों को शोधकर्ता द्वारा स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया जायेगा तो परिकल्पना अजाँचनीय हो जायेगी। स्वतंत्र चर के मूल्यों को घटा-बढ़ा कर आश्रित चर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर पूर्व कल्पना की सत्यता की जाँच शोधार्थी द्वारा किया जाता है।

चरों का नियंत्रण (control the variables) —

सर्व प्रथम इस चरण में शोधकर्ता द्वारा स्वतंत्र चर के अलावे आश्रित चर को प्रभावित करने वाले चरों का पता लगाया जाता है। तत्पश्चात इन चरों को, जिसे बाहरी चर (extraneous variables) कहा जाता है, नियंत्रित किया जाता है। अर्थात शोधकर्ता को अध्ययन प्रारंभ करने से पूर्व यह

सावधानी पूर्वक देखना पड़ता है कि कोई भी बाहिरंग (extraneous variables) प्रयोज्यों अर्थात् अध्ययन किए जाने वाले समूहों को किसी भी प्रकार प्रभावित तो नहीं कर रहा है। अगर कोई भी बाहिरंग चर सभी समूहों पर समान रूप से प्रभाव डाल रहा होता है तो उसे नियंत्रित करना जरूरी नहीं होता है।

प्रयोज्यों का चयन करना और समूह आवंटित करना —

जन संख्या से याद्रच्छिक (randomity) प्राप्त प्रतिदर्श को शोध की आवश्यकता के अनुसार उम्र, लिंग, या किसी और [illegible] अध्ययन के अनुरूप समान समूहों में विभक्त कर शोधार्थी द्वारा अध्ययन किया जाता है।

किसी भी अध्ययन में प्रयोज्यों के कितने समूह होते हैं यह इस बात पर निर्भर करता है कि प्रयोग में कितने स्वतंत्र चर हैं। साथ ही साथ यह भी ध्यान देना आवश्यक है कि स्वतंत्र चर में कितने स्तर हैं तथा बाहिरंग चरों का स्वरूप क्या है।

परीक्षण संचालन और प्रदत्त संग्रह (Test administration and data collection) —

यह चरण काफी महत्वपूर्ण माना गया है। इसमें शोधार्थी द्वारा काफी सावधानी बरतने की आवश्यकता पड़ती है। निश्चित समय और स्थान के अनुसार शोधकर्ता प्रयोज्यों के पास जाते हैं। परिकल्पना के अनुरूप पूरीक्षणों का संचालन शोधकर्ता करते हैं। जरूरत के हिसाब से कभी कभी परीक्षणों का संचालन मात्र एक बार किया जाता है और कभी-कभी आवश्यकतानुसार परीक्षणों को कई भागों में बाँटा किया जाता है।

परिणाम एवं विवेचना- (Result and discussion) —

शोधकार्य के इस चरण में प्रयोग से प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय परीक्षण किया जाता है। इससे आँकड़ों का मूल्यांकन होता है और परिणाम की विश्वसनीयता प्राप्त होती है। इसके लिए टी-टेस्ट, काई-टेस्ट या एनोवा (ANOVA) का सहारा लिया जाता है। इससे चर के संबंध में किया गया पूर्वकथन की सत्यता की जाँच विश्वसनीय ढंग से हो जाती है। इस बात की स्पष्ट व्याख्या की जाती है कि चर के संबंध में जो परिकल्पना की गई वह सही है या नहीं।

(12) परिणाम का सामान्यीकरण करना (Generalization of findings) —

अध्ययन के क्या परिणाम हैं उसका सम्बन्ध से प्राप्त प्रतिदर्श को पूरी जनसंख्या के लिए सही रहने का अनुमान किया जाता है। प्रतिदर्श के आधार पर प्राप्त परिणाम और निष्कर्षों का सामान्यीकरण इस बात पर निर्भर करता है कि प्रतिदर्श किस सीमा तक जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। मान लो कि यादृच्छिक रूप से चयनित प्रतिदर्श पूरी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करेगा अन्यथा ~~[illegible]~~ प्राप्त परिणाम मात्र प्रतिदर्श तक सीमित रहेगा और यह पूरी जनसंख्या [illegible] के लिए नहीं होगा।

(13) शोध रिपोर्ट लिखना (preparing the research report) —

शोध कार्य का अन्तिम चरण शोध रिपोर्ट तैयार करना है। इस चरण में शोधार्थी आरम्भ से अन्त तक के सभी कार्यों एवं प्राप्त परिणामों को क्रमबद्ध रूप से एक शोध प्रतिवेदन तैयार किया जाता है ताकि भविष्य में अन्य शोधकर्ताओं द्वारा इसकी जाँच की जा सके। इससे पुस्तक का रूप प्रदान कर दिया जाता है/जिससे